पोपलर उपजाएं, खूब कमाएं

छवि सिरोही, आर.एस. ढिल्लो और **के.एस. बागॅरवा**
वानिकी विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

पोपलर एक ऐसा वृक्ष है, जो जमीन की उत्पादकता बनाये रखते हुए 6-8 वर्षों में प्रति एकड़ करीब 2.0 लाख रुपये किसान को दे सकता है। पोपलर सीधा तथा तेज बढ़ने वाला वृक्ष है। कृषि वानिकी में इस वृक्ष का विशेष महत्व है, क्योंकि सर्दियों में इसके पत्ते गिर जाने से रबी की फसलों को नुकसान बहुत कम होता है। पोपलर का वृक्ष सीधा बढ़ता है, इसलिए इसकी छाया खरीफ फसलों को भी कम ही नुकसान करती है। पहले दो वर्षों में पोपलर के साथ रबी या खरीफ की सभी फसलें उगाई जा सकती हैं। तीसरे साल या उसके बाद में छाया सहने वाली फसलें जैसे हल्दी या अदरक बहुत लाभदायक रहती हैं। गेहूं और रबी की अन्य फसलें भी पोपलर के वृक्षों की कटाई तक उगाई जा सकती हैं। खरीफ में चारे की फसलें भी वृक्षों की कटाई तक उगाई जा सकती हैं। पोपलर को उगाकर अधिक आमदनी लेने के लिए निम्न सुझावों को ध्यान में रखना चाहिए:

भूमि का चुनाव

पोपलर के लिए गहरी और उपजाऊ भूमि अच्छी रहती है। इसके लिए सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है। अत: पोपलर वहीं लगाएं जहां पानी नियमित रूप से भली-भांति प्राप्त हो सके। सिंचाई व्यवस्था के साथ-साथ उचित जल निकास का भी प्रबंध होना चाहिए।

किस्में: पोपुलस डेल्टोयडस की कई किस्में प्रचलित हैं। जिनमें *जी-3* तथा *जी-48* की पैदावार अच्छी पाई गई है।

खेतों में पौध रोपण

पोपलर के पौधे 15 जनवरी से 15 फरवरी तक लगाए जाते हैं। इसकी अच्छी बढ़ोतरी के लिए 20-25 वर्ग मीटर जमीन चाहिए। कृषि वानिकी के लिए 5.4 मीटर या 5.5 मीटर की दूरी ठीक रहती है। पंक्ति से पंक्ति का फासला ज्यादा तथा पंक्तियां उत्तर-दक्षिण बनाएं। खेत के चारों तरफ तथा पानी के नाले के साथ लगाने के लिए 3 मीटर का फासला रखें। वृक्षारोपण से एक महीने पहले एक मीटर गहरा गड्ढा खोद लेना चाहिए। गड्ढे की खुदाई से निकली हुई मिट्टी को पुन: गड्ढे में नहीं डालना चाहिए। इसके लिए जमीन की ऊपरी सतह की मिट्टी में 3 कि.ग्रा. गोबर की खाद, 100 ग्राम सिंगल सुपरफॉस्फेट तथा 250 ग्राम नीम की खली या अन्य दीमकमार दवाई मिला दें। पौध रोपण के लिये ऐसे पौधे चुनें जिनकी आयु एक वर्ष हो, ऊंचाई कम से कम 4 मीटर तथा तना सीधा, अंगूठे की मोटाई का व बिना शाखाओं का हो। पौधे विश्वसनीय पौधशाला से प्राप्त करने चाहिए। पौधे लेते समय किसान को पौधशाला देखनी चाहिए तथा समान बढ़वार वाले रोगरहित पौधे ही लेने चाहिए। पौधे को गड्ढे में खड़ा करके खाद मिट्टी से भरने के बाद चारों तरफ से अच्छी तरह दबा दें। पौधे को पौधशाला से लाने तथा लगाने के दौरान इनमें नमी बनाये रखनी चाहिए। पौधे लगाने के बाद सिंचाई द्वारा बरसात शुरू होने तक मिट्टी में नमी बनाये रखें।

पर्यावरण को शुद्ध रखने में वन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वायुमण्डल से कार्बन-डाईऑक्साइड की बढ़ती मात्रा को नियंत्रित करने के लिए वनों का विस्तार तथा उनका संरक्षण बहुत जरूरी है। कृषि वानिकी पद्धति द्वारा ज्यादा से ज्यादा किसानों को वृक्ष लगाने में भागीदार बनाकर वन वृक्षों का विस्तार किया जा सकता है। कृषि फसलों के साथ-साथ वृक्ष उगाने को कृषि वानिकी के नाम से जाना जाता है। कृषि वानिकी द्वारा प्रति इकाई भूमि से अपेक्षाकृत ज्यादा उत्पादन प्राप्त होता है। बढ़ती जनसंख्या व घटते वन संसाधनों के कारण आज कृषि वानिकी का महत्व और भी बढ़ गया है।

कैसे तैयार करें पोपलर के पौधे

पोपलर के पौधे कलमों द्वारा तैयार किये जाते हैं। 3-4 आंखों वाली 20-25 सें.मी. लम्बी कलमें एक साल के पौधों से काटकर तैयार की जाती हैं। कलमों को 15 जनवरी से 15 फरवरी तक लगाना चाहिए। कलमों को अच्छी तरह तैयार की गई क्यारियों में 80.60 सें.मी. के फासले पर लगाना चाहिये। कलम लगाते समय उनका 2/3 भाग जमीन में तथा 1/3 भाग बाहर रखें। कलम की कम से कम एक आंख जमीन के ऊपर होनी चाहिये। कलम लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिये। इसके बाद भी क्यारियों में नमी बनाये रखने के लिए 7-10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई बहुत जरूरी है। अगली जनवरी तक इन कलमों से 4-5 मीटर ऊंचाई के पौधे तैयार हो जाते हैं, जिनका पौध रोपण के लिए प्रयोग किया जाता है।

पौधों की देखभाल

पहले वर्ष में सप्ताह में एक बार पौधों को भरपूर पानी देना चाहिये। दूसरे वर्ष में गर्मियों में 10 दिनों के अंतराल पर तथा सर्दियों में 15 दिनों बाद, तीसरे वर्ष गर्मियों में 15 दिनों बाद तथा सर्दियों में एक महीने बाद सिंचाई करें। उसके बाद सूखे मौसम में जब आवश्यकता हो तभी सिंचाई करें। 100 ग्राम यूरिया प्रति पौधे की दर से प्रति वर्ष देनी चाहिए। यूरिया डालने के बाद सिंचाई बहुत जरूरी है।

अप्रैल से अगस्त में दो वर्ष तक की आयु के पौधों के 1/3 निचले भाग पर निकल रही कलियों को बोरी के टुकड़ों द्वारा कोमलता से रगड़कर साफ कर लेना चाहिए। अच्छा गोलाकार वृक्ष तैयार करने के लिए कटाई-छंटाई जरूरी है। तीसरे से छठे साल तक पौधे के निचले एक तिहाई से आधे हिस्से तक शाखाएं काट देनी चाहिए। कटाई तने के बिल्कुल पास से हो तथा उसमें बोर्डोपेस्ट या चिकनी मिट्टी एवं गोबर का लेप लगाएं। पौधों के निचले आधे भाग में कोई शाखा न बनने दें तथा चोटी पर केवल एक ही शाखा रखें।

पौध संरक्षण उपाय

दीमक से बचाव के लिए 0.1 प्रतिशत क्लोरोपायरीफॉस का घोल बनाकर डालें। पोपलर में तना छेदक कीड़ा भी लगता है। यदि पोपलर के तने के छेद में बारीक बुरादा सा नजर आये तो मिट्टी का तेल डालकर ऊपर से चिकनी मिट्टी से छेद बन्द कर दें।

पोपलर आधारित कृषि वानिकी

उपज व आमदनी

6-8 वर्षों में जिस समय जमीन से 1.37 मीटर की ऊंचाई पर तने की लपेट एक मीटर हो जाती है, यह पेड़ काटने लायक हो जाता है। वर्तमान समय में एक पेड़ की कीमत 500-700 रुपये के लगभग है। इसकी लकड़ी माचिस, प्लाईवुड, पैकिंग के लिए बॉक्स, खेल का सामान आदि बनाने के काम आती है। कृषि फसलों से मिलने वाली आमदनी इससे अलग होती होगी। ■

सफलता गाथा

कृषि वानिकी से हुए खुशहाल

श्री महेन्द्र सिंह एक उन्नतशील किसान हैं और ग्राम-सराई, ब्लॉक-बबीना, तहसील-बबीना, जिला-झांसी के निवासी हैं। ये जलवायु परिवर्तन की वर्तमान स्थिति के लिए सजग हैं। इन्होंने अपने लगभग 5 एकड़ के फार्म पर विविध प्रकार की फसल प्रणाली एवं कृषि-उद्यानिकी, कृषिवानिकी तथा चारा घास का अंगीकरण किया है। चार वर्ष पूर्व इन्होंने कुमट के 400 वृक्ष अपने फार्म की बाउन्ड्री पर 2 मीटर की दूरी पर लगाये। इसके अलावा इन्होंने अमरूद, नीबू आदि फलदार पौधों का रोपण कर लगभग आधा एकड़ भूमि पर कृषि-उद्यानिकी का मॉडल लगाया है। लगभग 100 वृक्ष सागौन के लगाये तथा खेत की मेड़ों पर नेपियर घास का रोपण किया है। पशुपालन में ये अग्रणी हैं एवं इनके पास दूध देने वाली 3 भैंसें तथा एक बैलों की जोड़ी है। अपने फार्म की सफलता की खुशी से श्री महेन्द्र सिंह बताते हैं कि कुमट से खेतों की जीवित बाड़ तैयार हो गई है, जिससे आवारा या अन्ना प्रथा के तहत चरने वाले पशुओं से खेत पर खड़ी फसल का बचाव होता है। उद्यानिकी के पौधों से अमरूद व नीबू की फसल मिलना आरंभ हो गई है एवं पशुओं के लिए हरा चारा नेपियर से प्राप्त होता रहता है। श्री महेन्द्र सिंह अपने फार्म पर मूंगफली-गेहूं, उड़द-जौ की फसलें उगाते हैं। इनके अनुसार कुमट की जीवित बाड़ से 10-15 प्रतिशत उपज की हानि रुक गई है और आर्थिक लाभ बढ़ा है। कुछ समय बाद कुमट से गोंद की पैदावार मिलने लगेगी। इनका अनुमान है कि यदि कुमट के एक पौधे से औसतन 200 ग्राम गोंद मिला तो लगभग 400 पौधों से 80 कि.ग्रा. गोंद प्राप्त होगा। औसतन कुमट की गोंद 500 रुपये प्रति कि.ग्रा. बिकती है। इस प्रकार गोंद से अतिरिक्त आय लगभग 40,000 रुपये प्रति वर्ष होगी। अपने फार्म पर सफल वृक्षारोपण एवं कृषिवानिकी के अंगीकरण से महेन्द्र सिंह जी का परिवार खुश है। ■

कृषक श्री महेन्द्र सिंह यादव
के फार्म पर कुमट की जीवित बाड़